Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 6, June - 2026

DOIs:10.2018/SS/202606007 --:-- Research Paper / Article / Review

टीम शिक्षण: एक सार्वभौमिक समावेशी शिक्षणशास्त्र अभिकल्प

[1] डॉ. देवेन्द्र प्रताप सिंह, [2] डॉ. दुर्गेश सिंह यादव
[1]सहायक आचार्य, बी.एड. विभाग, हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी, (उ.प्र.), भारत
[2]सहायक आचार्य, बी.एड. विभाग, हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी, (उ.प्र.), भारत
devendrapratap99@gmail.com

सारांश: समावेशी शिक्षणशास्त्र, शिक्षणशास्त्र परिवार का एक ऐसा सदस्य है जो अधिगमकर्ता की पृष्ठभूमि या पहचान की परवाह किए बिना सभी की अधिगम आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है और अधिगम सामग्री के साथ उनके जुड़ाव का समर्थन करता है साथ ही शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के इस बुनियादी सिद्धांत का भी अनुपालन करता है कि कक्षा में सभी विद्यार्थियों की आवाज़ सुनी जाए एवं सभी को सीखने की प्रक्रिया में एक समान भागीदारी से एक समान अवसर मिले।

समावेशी शिक्षणशास्त्र का प्रारम्भ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर एक गंभीर चिंतन एवं शोध से होता है, जैसे किसी भी कक्षा में विद्यार्थियों की अधिगम भागीदारी में असंतुलन क्यों एवं कैसे उत्पन्न होता है? एवं उसे एक शिक्षक अपने शिक्षण से कैसे दूर कर सकता है? क्यों कुछ विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थी की तुलना में अधिक बार अधिगम प्रक्रिया में भाग लेते हैं एवं तुलनात्मक रूप से अधिक आसानी से सीखते हैं? वहीं कुछ विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में बहुत ही कम अपनी सहभागिता प्रदर्शित करते हैं एवं तुलनात्मक रूप से सीखने में भी कठिनाई महसूस करते हैं? समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व व्यावसायिक मान्यताएं एवं धारणाएँ विद्यार्थियों की कक्षागत क्रियाओं को क्यों एवं कैसे प्रभावित करती हैं? विद्यार्थियों की अपनी मनोदैहिक पहचान, सामाजिक आर्थिक-पृष्ठभूमि उनके स्वयं के साथ जुड़ाव स्तर एवं दूसरों के साथ उनके जुड़ाव स्तर को कैसे प्रभावित कर सकती हैं? शैक्षिक पाठ्यक्रम एवं नवीन शैक्षणिक आव्यूह सर्वशिक्षा में विद्यार्थी भागीदारी एवं सुगम पहुँच को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं? समावेशी शिक्षणशास्त्र के विभिन्न प्रतिमानों एवं अभिकल्पों में निपुणता अर्जित करके एक शिक्षक समावेशी शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए आयोजित वैश्विक शैक्षिक यज्ञ में अपनी शिक्षण रूपी आहुति बड़ी आसानी से दे सकता है।

बीज शब्द : समावेशी शिक्षा, समावेशी शिक्षणशास्त्र, सतत विकास लक्ष्य, टीम शिक्षण आदि।

1. प्रस्तावना:

समावेशी शिक्षा (जिसे समावेशन भी कहा जाता है) एक ऐसी शिक्षा है जिसमें मुख्यधारा के सभी शैक्षिक संस्थानों, स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों की अधिगम प्रक्रिया में सामान्य और दिव्यांग विशेष शैक्षिक)आवश्यकताओं वाले(सहित सभी विद्यार्थी शामिल होते हैं। समावेशी शिक्षा सभी विद्यार्थियों के लिए उनकी विविध आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से उत्तरदायी, स्वीकार्य, सम्मानजनक और सहायकपूर्ण तरीके से पूरा करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक उनकी पहुंच को सुनिश्चित करती है। इसमें प्रत्येक विद्यार्थी एक सामान्य एवं अनुकूल अधिगम वातावरण में सभी शैक्षिक गतिविधियों एवं कार्यक्रम में भाग लेते हैं ताकि बहिष्कार का कारण बनने वाली सभी बाधाओं को कम करने तथा दूर करने में सहायता मिल सके।

इस प्रकार समावेशी शिक्षा एक ऐसे सामान्य शैक्षिक वातावरण में दी जाती है जहां विभिन्न पृष्ठभूमि एवं क्षमताओं वाले विद्यार्थी एक समावेशी वातावरण में एक साथ सीखते हैं। यहाँ सामान्य शैक्षिक वातावरण से तात्पर्य- कक्षाएं, पुस्तकालय, जिम, प्रदर्शन थिएटर, संगीत कक्ष, कैफेटेरिया, खेल के मैदान एवं स्थानीय समुदाय शामिल हो सकते हैं। सामान्य शैक्षिक वातावरण वह स्थान नहीं है जहाँ बौद्धिक दिव्यंगता या अन्य विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी अपने साथियों से अलग-थलग रहकर सीखते हैं (भयाना, एच ,.2019)।

यूनेस्को के अनुसार, समावेशी शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो-

I. यह विश्वास करती है कि सभी बच्चे सीख सकते हैं तथा सभी की आवश्यकताएं अलग-अलग होती हैं।
II. सीखने की कठिनाई की पहचान करना एवं उसके प्रभाव को न्यून करना।
III. विशिष्ट शिक्षा का नवीन प्रगतिशील स्वरूप है।

समावेशी शिक्षा सतत रूप से यह अनुसंधान करती है कि हम अपने स्कूलों, कक्षाओं, शैक्षिक कार्यक्रमों और गतिविधियों को कैसे विकसित एवं डिज़ाइन करें ताकि सभी विद्यार्थी एक साथ सीखें एवं सीखने की प्रक्रिया में अपनी सहभागिता प्रस्तुत कर सकें। इस प्रकार सम्पूर्ण शैक्षिक तंत्र को दिव्यांग विद्यार्थियों को शामिल करने के लिए अनुकूलित होना चाहिए न कि दिव्यांगों को शैक्षिक तंत्र के अनुकूल बनने के लिए बाध्य करना चाहिए आस्कसोर्स), एन(.डी.। उदाहरण के लिए, यदि विद्यालय के कुछ भौतिक हिस्से दिव्यांग विद्यार्थियों के पहुंच के योग्य नहीं हैं तो उस हिस्से को दिव्यांग विद्यार्थियों की पहुँच के योग्य बनाया जाय न कि दिव्यांग विद्यार्थियों को उस स्थान तक पहुँचने के लिए अनुकूलित एवं सहायता प्रदान की जाए।

United Nations Convention on the Rights of Persons with Disabilities (UNCRPD-2006) का अनुच्छेद 24 हो या फिर Sustainable Development Goals (SDG-15) का वां लक्ष्य 4 या फिर Right to Education (RTE-2009) का अध्याय 4 एवं National Education Policy (NEP-2020) का अध्याय 6 एवं 14 हो, ये सभी शैक्षिक दस्तावेज समावेशी शिक्षा का सार्वभौमिक समर्थन करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इस बात पर जोर देती है कि 'सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने के लिए शिक्षा सबसे बड़ा उपकरण है' तथा जिसका समावेशी समुदाय एवं समाज के विकास पर बड़े पैमाने पर प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने अपने नीति दस्तावेज़ में दिव्यांगता समावेशन के सभी पहलुओं एवं समतापूर्ण समावेशी शिक्षा पर समर्पित अध्याय 6 एवं 14 में कहा है कि सभी विद्यार्थियों की पहुंच और भागीदारी में असमानताओं को कम करने वाले अंतराल को पाटने के लिए मुद्दों, चुनौतियों और सिफारिशों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। दिव्यांग बच्चों सहित कम प्रतिनिधित्व वाले विद्यार्थी समूहों को शामिल करने के मुद्दों और सिफारिशों को नीति में शामिल भी किया गया है साथ ही Socio Economically Disadvantaged Groups (SEDG) अर्थात सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित समूह को भी प्रतिनिधित्व दिया गया है जो कि मनुष्य की लैंगिक पहचान, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पक्ष को व्यक्त करने वाला एक व्यापक शब्द है।

2. शिक्षणशास्त्र

शिक्षणशास्त्र अर्थात Pedagogy शब्द स्वयं में शिक्षण प्रक्रिया के वैज्ञानिक एवं कलात्मक पक्ष को संदर्भित करता है। यह शब्द ग्रीक भाषा से आया है, जहां 'पेड' का मतलब 'बच्चा' और 'एगस' का मतलब 'नेता' है अर्थात एक ऐसा शिक्षण जिसमें बच्चा (विद्यार्थी) एक नेता (केंद्र बिंदु) के रूप में कार्य करता है। इस प्रकार शिक्षणशास्त्र से तात्पर्य, शिक्षण की प्रत्येक वह पद्धति जिसमें प्रत्येक गतिविधि का निर्धारण एवं क्रियान्वयन विद्यार्थी आवश्यकताओं एवं रुचियों को ध्यान में रखकर किया जाता है। अतः शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों को शिक्षित करने की 'कला एवं विज्ञान' है। शिक्षणशास्त्र, शिक्षण की समग्र रूपरेखा, सिद्धांतों, विधियों एवं सर्वोत्तम प्रथाओं को शामिल करता है। इसमें पाठ्यक्रम डिजाइन, अधिगम सामग्री वितरण तकनीक, कक्षा प्रबंधन रणनीतियाँ एवं आकलन तथा मूल्यांकन पद्धतियां शामिल हैं जिनका उपयोग प्रभावी ढंग से शिक्षा प्रदान करने के लिए एक कुशल शिक्षक द्वारा अपने शिक्षण में किया जाता है। शिक्षणशास्त्र का उद्देश्य इस तथ्य की व्यापक समझ को विकसित करना है कि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों, पूर्व अनुभवों एवं विकासात्मक चरणों के आधार पर कैसे सीखते हैं। यह सभी उम्र और क्षमताओं के विद्यार्थियों के लिए सीखने को सक्षम करने के सर्वोत्तम संभावित तरीकों और साधनों की पहचान करने पर केंद्रित है। एक अनुशासन के रूप में शिक्षणशास्त्र का उद्देश्य शिक्षण के लिए अनुसंधान-आधारित ऐसे मानकों को स्थापित एवं विकसित करना है जो सभी स्तर के विद्यार्थियों को सार्थक एवं अधिक आकर्षक तथा मनोरंजक तरीके से सीखने की प्रक्रिया में मदद प्रदान कर सकें (एम्ब्रोस एट अल., 2010)।

2.1 समावेशी शिक्षणशास्त्र

समावेशी शिक्षणशास्त्र से तात्पर्य उस शिक्षणशास्त्र से है जो विद्यार्थी की पृष्ठभूमि या पहचान की परवाह किए बिना सभी विद्यार्थियों की जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करता है एवं विषय सामग्री के साथ उनके जुड़ाव का समर्थन करता है (एम्ब्रोस एट अल, (2010। समावेशी शिक्षणशास्त्र, शिक्षण का एक ऐसा विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण है जो विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में अपनी सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक पहचानों एवं स्थितियों को आपस में जोड़ने का काम करता है। इसे शिक्षण के कुछ समय पहले या शिक्षण के दौरान नहीं सोचा जाना चाहिए बल्कि पाठ्यक्रम डिजाइन, कक्षा प्रबंधन तथा शिक्षण-अधिगम के आकलन के प्रत्येक पहलू में व्याप्त होना चाहिए (लाग्रेव-इटर्बे, 2018)।

समावेशी शिक्षणशास्त्र अथवा समावेशी शिक्षण अभ्यास को उन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों एवं तरीकों के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है जो यह सुनिश्चित करता हैं कि सभी विद्यार्थी शिक्षा की मुख्यधारा तक पहुंच सकें एवं प्रत्येक को अपनी प्रतिभा विकसित करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद के लिए सही समर्थन प्राप्त हो सके (फ्लोरियन, एल., 2024)। जब

शिक्षण वास्तव में समावेशी होता है तो वह सभी विद्यार्थियों को लाभ पहुंचाता है न कि केवल दिव्यांग विद्यार्थियों को। इस प्रकार समावेशी शिक्षणशास्त्र एक शिक्षक की उस मूल शिक्षण प्रवृत्ति पर आधारित होता है जिसमें यह सुनिश्चित किया जाता है कि कक्षा में सभी विद्यार्थियों की आवाजें सुनी जाए और सभी को सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने का समान मौका मिले।

समावेशी शिक्षणशास्त्र कक्षा में न केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक-लब्धि को बढ़ाता है बल्कि उन सभी विद्यार्थियों के समावेशन की सुरक्षा भी करता है जो किसी भी प्रकार के बहिष्कार का शिकार अथवा हाशिए के किसी भी रूप का प्रतिनिधित्व कर रहे होते हैं। समावेशी शिक्षणशास्त्र के माध्यम से संकाय अपने शिक्षण की उन सभी दमनकारी प्रथाओं को खत्म कर सकते हैं जिन्होंने विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में बाधा उत्पन्न की है तथा न्यायसंगत एवं सामाजिक समानता के वातावरण के निर्माण में नकारात्मक भूमिका निभाते हैं। निष्कर्तः हम यह कह सकते हैं कि समावेशी शिक्षणशास्त्र, शिक्षण एवं अधिगम के उस समग्र परिवर्तनकारी तरीके को अभिव्यक्त करता है जिसमें एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को मन, शरीर और आत्मा से युक्त संपूर्ण मानव के रूप में अपनाने तथा अंतःक्रियात्मक एवं गतिशील कक्षा वातावरण बनाने के लिए निरंतर अपने अन्तःकरण से प्रेरित होता रहता है। लेकिन इस जटिल वातावरण को विकसित करने के लिए शिक्षकों को अंतर्वैयक्तिक और पारस्परिक जागरूकता, नियमित पाठ्यक्रम समीक्षा और समावेशी प्रथाओं के ज्ञान के मिश्रण का निरंतर अभ्यास करना होता है (रोज एवं मायर, 2022)।

2.2 समावेशी शिक्षण प्रतिमान

सामान्य एवं संकुचित शब्दों में शिक्षण प्रतिमान सीखने के सिद्धांत से प्राप्त ऐसे संज्ञानात्मक ढांचे हैं जो एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की जरूरतों के अनुरूप अपने शिक्षण की योजना बनाने, बनी योजना को क्रियान्वित करने तथा क्रियान्वयन के पश्चात उसके आकलन एवं मूल्यांकन करने के वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं। जॉयस एवं वेइल के अनुसार, "व्यापक सन्दर्भों में शिक्षण प्रतिमान एक ऐसी योजना या पैटर्न है जिसका उपयोग पाठ्यक्रम को आकार देने (अध्ययन के दीर्घकालिक पाठ्यक्रम), निर्देशात्मक सामग्री को डिजाइन एवं चयन करने, विशिष्ट निर्देशात्मक लक्ष्य को पूरा करने, कक्षागत व्यवस्था में शिक्षक कारवाई का निर्देशन एवं मार्गदर्शन करने के लिए निर्देशात्मक रणनीतियाँ बनाने में किया जाता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शिक्षण प्रतिमान ऐसे अनुदेशात्मक अभिकल्प हैं जो विशेष शैक्षिक एवं शैक्षणिक पर्यावरणीय स्थितियों को निर्दिष्ट करने एवं उत्पन्न करने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं तथा शिक्षकों को अपनी निर्देशात्मक रणनीतियों को व्यवस्थित करने और अपने विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए एक व्यवस्थित रूपरेखा प्रदान करते हैं साथ हीविद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता, व्यक्तिगत क्षमताओं, संज्ञानात्मक क्षमताओं और व्यवहार संबंधी पहलुओं को विकसित करने में सहायक होते है (पिनो-जेम्स,एन. 2014)।

वैसे तो शिक्षण प्रतिमानों का अपना एक पूरा समृद्ध परिवार है, उनमें से अधिकांश सामान्य शिक्षण के प्रतिमान है लेकिन कुछ प्रतिमान विशेष रूप से समावेशी शिक्षा के अधीन संचालित होने वाले शिक्षण के लिए डिज़ाइन किए गए हैं जिन्हें सामान्य शब्दों में समावेशी शिक्षण प्रतिमान अथवा सार्वभौमिक शिक्षण-अधिगम अभिकल्प कहा जाता है। कुछ लोकप्रिय समावेशी शिक्षण प्रतिमानों के निम्न नाम हैं लेकिन यहाँ विस्तृत चर्चा केवल टीम शिक्षण प्रतिमान तक सीमित है-

I. टीम शिक्षण प्रतिमान (Team Teaching Model)।
II. पुश इन एवं पुल आउट प्रतिमान (Push In & Pull Out Model)।
III. अनुकूलित अधिगम वातावरण या वालेम प्रतिमान (WALEM: Wang Adaptive Learning Environment Model)।
IV. सिम प्रतिमान (SIM: Strategies Intervention Model)।
V. साले प्रतिमान (SAALE: Systematic Approach for Adapative Learning Environment)।
VI. चक्रीय समावेशन प्रतिमान (Circle of Inclusion Model)।
VII. सामाजिक मुख्यधारा प्रतिमान (Social Main Streaming Model)।
VIII. गैर-शैक्षणिक प्रतिमान (Non Academic Model)।

2.3 टीम शिक्षण प्रतिमान (Team Teaching Model)

शिक्षण का यह प्रतिमान मूल रूप से सन 1955 में हावर्ड विश्वविद्यालय में फ्रांसिस चेज द्वारा सामान्य शिक्षण के लिए विकसित किया गया था। लेकिन कालांतर में इसे समावेशी शिक्षण के लिए विशेषज्ञों द्वारा सामान्यीकृत कर लिया गया तथा

वर्तमान में यह वर्तमान में यह सहगामी शिक्षण (Co-Teaching) के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रतिमान के अंतर्गत दो या दो से अधिक सामान्य शिक्षक एवं विशिष्ट शिक्षक मिल कर एक साथ एक समय में कक्षा में सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य करते हैं जिसमें दिव्यांग एवं विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी भी शामिल होते हैं। यह प्रतिमान विशेष रूप से शिक्षण परिस्थिति में सहभागिता, दायित्व साझेदारी एवं उपलब्ध संसाधनों के एकीकरण जैसे सिद्धांतों का अनुपालन करता है। इस प्रतिमान में एक टीम में एक सामान्य शिक्षक एवं एक विशिष्ट शिक्षक अथवा दो सामान्य शिक्षक एवं एक विशिष्ट शिक्षक या दो सामान्य शिक्षक एवं दो विशिष्ट शिक्षक हो सकते हैं। विशेष परिस्थितियों में टीम में एक सामान्य शिक्षक और एक पैराप्रोफेशनल भी एक साथ काम कर सकते हैं।

2.4 टीम शिक्षण के प्रकार

A. सम्बंधों के आधार पर:

I. **पदानुक्रमित टीम शिक्षण (Hierarchic Team Teaching):** इसमें सभी शिक्षकों को उनके अनुभव एवं विशेज्ञता के आधार पर एक श्रेणीक्रम संरचना में व्यवस्थित करके एक शिक्षक को सबसे ऊपर टीम प्रमुख के रूप में मनोनीत किया जाता है तथा शेष शिक्षकों को भी श्रेणी में क्रमशः मध्य एवं निम्न स्तर पर रखा जाता है साथ ही उसी क्रम में उनके कार्य एवं दायित्व भी पूर्व निर्धारित कर दिए जाते हैं।

II. **सहक्रियात्मक टीम शिक्षण (Synergetic Team Teaching):** इसमें समूह में शामिल शिक्षकों में आपस में कोई भेद नहीं होता है, सभी शिक्षक आपसी समन्वय के साथ एक समान रूप से कार्य में सहभागी होते हैं साथ ही टीम के सभी सदस्य आपसी सहमति से ही अपने कार्यों एवं दायित्वों का बँटवारा भी स्वयं ही करते हैं।

B. भूस्थानिक परिस्थिति के आधार पर:

I. **विभागीय टीम शिक्षण (Departmental Team Teaching):** इसमें किसी संस्थान के किसी विशेष विभाग के कुछ या सभी शिक्षक आपस में मिलकर अपने विभाग के विद्यार्थियों के लिए टीम शिक्षण के दायित्व का निर्वहन करते हैं। इसे एकल अनुशासन टीम शिक्षण (single discipline team teaching) भी कहते हैं।

II. **संकाय टीम शिक्षण (Faculty Team Teaching):** इसमें किसी संस्थान के किसी संकाय के अंतर्गत कार्य करने वाले दो या दो से अधिक विभाग के कुछ शिक्षक आपस में मिलकर अपने संकाय के विद्यार्थियों के लिए टीम शिक्षण के दायित्व का निर्वहन करते हैं। इसे अन्तर अनुशासनात्मक टीम शिक्षण (inter disciplinary team teaching) भी कहते हैं।

III. **संस्थागत टीम शिक्षण (Institutional Team Teaching):** इसमें किसी संस्थान के अंतर्गत कार्य करने वाले दो या दो से अधिक संकाय के कुछ शिक्षक आपस में मिलकर अपने संस्थान या किसी दूसरे संस्थान के विद्यार्थियों के लिए टीम शिक्षण के दायित्व का निर्वहन करते हैं। इसे बहु अनुशासनात्मक टीम शिक्षण (multi disciplinary team teaching) कहते हैं।

C. डेविड वारविक के टीम शिक्षण प्रकार:

I. विषयगत दृष्टिकोण (Thematic Approach)।
II. समवर्ती दृष्टिकोण (Concurrent Approach)।
III. संचयी अनुक्रम (Cummulative Sequence)।
IV. संकेंद्रित पैटर्न (Concentric Pattern)।

I. विषयगत दृष्टिकोण (Thematic Approach)

इसके अंतर्गत पूरी टीम मिलकर किसी एक विशेष विषय का शिक्षण कार्य सम्पादित करती है तथा टीम विषय की तथ्यात्मक सामग्री की एक श्रृंखला निर्मित कर लेती है तथा सामग्री के अंतःसम्बंध के आधार पर उसका एक निश्चित क्रम बनाकर, क्रम से ही प्रत्येक भाग या खंड का अध्यापन एवं प्रस्तुतिकरण अलग-अलग समय पर इस प्रकार करती है कि जब सभी खण्डों का अध्यापन पूर्ण हो जाए तो प्रस्तुति एक बड़े मुख्य पाठ का रूप ले सके और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के उन्हें कुछ अनुकूल अनुवर्ती कार्य प्रदान किया जा सके।

II. समवर्ती दृष्टिकोण (Concurrent Approach)

इस दृष्टिकोण के अंतर्गत विद्यार्थियों के एक समूह के साथ सामग्री की समरूपता के आधार पर एक ही विषय के दो या दो से अधिक थीम या प्रकरण एक साथ चल रहे होते हैं अर्थात इसमें पाठ्यक्रम स्वतंत्र लेकिन समानांतर रेखाओं पर चलता है लेकिन जिसमें निरंतर क्रॉस रेफरेंस और एक दूसरे के साथ जुडाव होता है। उदाहरण के लिए बी.एड. विभाग शैक्षिक दर्शन विषय के अंर्तगत अपने विद्यार्थियों को ईश्वर संबंधी प्राच्य एवं पाश्चात्य अवधारणा को एक साथ पढ़ाने का निर्णय ले सकता है।

III. संचयी अनुक्रम दृष्टिकोण (Cummulative Sequence Approach)

यह दृष्टिकोण विभिन्न विभागों के शिक्षकों को एक टीम के रूप में योगदान करने के लिए व्यवस्थित करने का एक तरीका है। इसमें प्रारम्भ में विद्यार्थियों के सामने कोई विषय प्रस्तुत नहीं किया जाता है, लेकिन जैसे-जैसे टीम आगे बढ़ती है वह आपसी समन्वय से विषय का एक समग्र पैटर्न तैयार एवं विकसित करती है जिसमें विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम लगातार एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। सामान्यतः यह दृष्टिकोण बड़े विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयुक्त होता है, लेकिन इसे छोटे बच्चों के लिए भी अपनाया जा सकता है।

IV. संकेंद्रित पैटर्न (Concentric Pattern)

यह टीम शिक्षण का वह दृष्टिकोण है जिसमें कई शिक्षक मिलकर किसी कठिन विषय को सरल से कठिन, मूर्त से अमूर्त दिशा में अपने विद्यार्थियों को सिखाने का प्रयास करते हैं। इसमें शिक्षक सबसे पहले पाठ के विषय में वह जानकारी देते हैं जो विद्यार्थी जानते हैं तत्पश्चात धीरे-धीरे सामग्री का कठिनता स्तर बढ़ता एवं सूक्ष्म तथा गहरा होता जाता है। इस प्रकार इस दृष्टिकोण में पाठ्यक्रम बाहर से अंदर की ओर प्रसारित होता है।

2.5 टीम शिक्षण के विभिन्न उपागम (Approaches)

I. एकल शिक्षणएक/ल प्रेक्षण (One Teach/One Observe)
II. एकल शिक्षण/एकल सहायता(One Teach/One Assist)
III. स्टेशन शिक्षण (Station Teaching)
IV. समानांतर शिक्षण (Parallel Teaching)
V. वैकल्पिक या विभेदित शिक्षण (Alternative Teaching)
VI. टैग टीम शिक्षण (Tag Team Teaching)

I. एकल शिक्षण/एकल प्रेक्षण (One Teach/One Observe)

टीम शिक्षण का यह प्रतिमान, टीम शिक्षण के लिए सबसे कम सहयोगात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है क्योंकि यह कक्षा में निर्देश एवं शिक्षण-अधिगम की जिम्मेदारी किसी एक शिक्षक पर डालता है तथा दूसरा शिक्षक या टीम के अन्य शिक्षक कक्षा में चारों ओर घूम-घूम कर विद्यार्थियों की गतिविधियों का अवलोकन करते हैं तथा गतिविधियों पर आधारित आंकड़े एकत्रित करते हैं जो उन विद्यार्थियों के भावी शिक्षण में उपयोग किया जाता है। यह अवलोकन किसी विद्यार्थी के लिए सामान्य या विशिष्ट हो सकता है। यह प्रतिमान यह सुनिश्चित करता है कि पूरी कक्षा को एक ही स्रोत से लगातार निर्देश, ज्ञान तथा जानकारी प्राप्त हो एवं वह स्रोत उस निर्देश एवं ज्ञान को प्रदान करने के लिए समूह का सबसे योग्य सदस्य हो। हालाँकि इस प्रतिमान की उपयोगिता सीमित है क्योंकि यह निर्देश या विद्यार्थी सहायता के लिए अन्य शिक्षकों का उपयोग नहीं करता है।

II. एकल शिक्षण/एकल सहायता(One Teach/One Assist)

इस प्रतिमान में एक शिक्षक प्राथमिक शिक्षक के रूप में पूरी कक्षा को पाठ पढ़ाता है जबकि दूसरा शिक्षक घूम-घूम कर व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों को सीखने में मदद एवं उनकी कठिनाइयों का निराकरण करता है। तत्पश्चात आवश्यकतानुसार दोनों अपनी भूमिकाओं की अदला-बदली भी कर सकते हैं। इस प्रतिमान में पाठ पढ़ाने के पश्चात् डीब्रीफिंग (संचालित सभी क्रियाओं की एकीकृत समीक्षा) एक महत्वपूर्ण पक्ष है जिसके अंतर्गत दोनों शिक्षक आपस में बैठकर यह जानने की कोशिश करते हैं कि पाठ को सीखते समय कक्षा के किस विद्यार्थी को किस प्रकार की कठिनाई एवं किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता हुई एवं उन्होंने उस सहायता को किस प्रकार प्रदान किया ताकि आगामी पाठ को सिखाते समय वह उन कठिनाइयों को दूर एवं प्रदान की जाने वाली सहायता को और अधिक बेहतर कर सकें।

III. स्टेशन शिक्षण (Station Teaching)

इस प्रतिमान में कक्षा को विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकता के अनुसार तीन या अधिक स्वतंत्र समूहों में छोटे-छोटे शिक्षण केन्द्रों के रूप में विभाजित कर दिया जाता है और प्रत्येक समूह को एक शिक्षक के हवाले कर दिया जाता है वही शिक्षक उस समूह की शिक्षण-अधिगम गतिविधियों का पूर्ण नियोजन एवं क्रियान्वयन करता है। यदि शिक्षकों की तुलना में विद्यार्थी समूह या शिक्षण स्टेशन अधिक होते हैं, तो कुछ स्टेशन कक्षा के मेधावी विद्यार्थी नेतृत्व वाले भी हो सकते हैं। इस प्रतिमान में भी आवश्यकतानुसार शिक्षक, विद्यार्थी समूह को परवर्तित किए बिना अपना समूह बदलकर अलग-अलग तरीके से अपने-अपने समूह को पढ़ा सकते हैं।

IV. समानांतर शिक्षण (Parallel Teaching)

इस प्रतिमान में दो या दो से अधिक शिक्षक आपस में मिल-जुल कर किसी एक जटिल अधिगम सामग्री को पढ़ाने की एक साझा योजना बनाते हैं तत्पश्चात कक्षा को आधा-आधा या बराबर भागों में विभाजित करके एक ही समय पर एक ही सामग्री को पूर्व निश्चित योजना के अनुसार पढ़ाते हैं।

V. वैकल्पिक या विभेदित शिक्षण (Alternative Teaching)

इस प्रतिमान में एक शिक्षक कक्षा के अधिकांश विद्यार्थियों अथवा विद्यार्थियों के एक बड़े समूह को पढ़ाता एवं निर्देश देता है तथा उसी समय दूसरे शिक्षक उसी कक्षा के विद्यार्थियों के छोटे-छोटे समूह को उसी पाठ का वैकल्पिक या संशोधित संस्करण पढ़ाते हैं। इसी कारण वैकल्पिक शिक्षण को कभी-कभी "बड़ा समूह-छोटा समूह शिक्षण" भी कहा जाता है। चूंकि इस प्रतिमान में विद्यार्थियों के छोटे समूह उनकी अधिगम ज़रूरतों के आधार पर निर्मित होते हैं, इसलिए इसके क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों को उस कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमि, ज्ञान-अंतराल, अधिगम तत्परता स्तर आदि विभिन्न मनोवैज्ञानिक पक्षों के बारे में जानकारी होना अति आवश्यक है।

VI. टैग टीम शिक्षण (Tag Team Teaching)

इस प्रतिमान में दो या दो से अधिक शिक्षक (कुछ सामान्य एवं कुछ विशिष्ट शिक्षक) एक ही समय में कक्षा में होते हैं तथा बारी-बारी से पूरी कक्षा को अपने-अपने तरीके से पढ़ाते हैं। इस प्रतिमान में आवश्यक रूप से सभी शिक्षक सदस्य मिलजुल कर एक ऐसी लचीली योजना बनाते हैं जिसमें यह निर्धारित तो होता है कि पाठ का कौन सा भाग कौन पढ़ायेगा और पढ़ाते समय कौन किस क्रम में आएगा।

इस प्रतिमान में कक्षा में पढ़ाते समय जब एक सदस्य कोई बात कह रहा होता है तो यदि दूसरे सदस्य को यह महसूस होता है कि इस बात का विस्तार आवश्यक है तब दूसरा सदस्य कूदकर उस बात को विस्तार से बता सकता है अर्थात यह प्रतिमान एक शिक्षक को अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर निकलने एवं दूसरे शिक्षक को यह देखने की अनुमति देता है कि विद्यार्थियों से भरी कक्षा में कैसे जाते हैं? साथ ही यह शिक्षक को एक ऐसे साथी के माध्यम से अपने शिक्षण कौशल के बारे में जानने एवं सुधारने का अवसर भी देता है जो उसे उसके शिक्षण के सन्दर्भ में फीडबैक प्रदान कर सकता है तथा कुछ मामलों में उसे सलाह भी दे सकता है।

2.6 टीम शिक्षण प्रतिमान के सकारात्मक पक्ष

- **सहयोग:** इस प्रतिमान में सामान्य शिक्षक एवं विशिष्ट शिक्षक अधिगम सामग्री, शिक्षण एवं निर्देश रणनीतियों, अधिगम आकलन की योजना आपस में मिलकर बनाते हैं अर्थात दोनों मिलकर अपने विद्यार्थियों के लिए एक बेहतर शिक्षण-अधिगम परिवेश बनाने के लिए अपनी विशेषज्ञता तथा ज्ञान को साझा करते हैं।
- **साझा जिम्मेदारी:** इस प्रतिमान में दोनों शिक्षक विद्यार्थियों को पढ़ाने और उनकी विविध आवश्यकताओं को पूरा करने की जिम्मेदारी साझा करते हैं। वे विभेदित निर्देश प्रदान करने, व्यक्तिगत शिक्षण लक्ष्यों को संबोधित करने और आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम और सामग्रियों को संशोधित करने के लिए भी मिलकर काम करते हैं।
- **समावेशी वातावरण:** यह प्रतिमान कक्षा में समावेशी वातावरण को बढ़ावा देता है जहां विशेष आवश्यकता वाले एवं दिव्यांग विद्यार्थी पूरी तरह से अधिगम प्रक्रिया में शामिल होते हैं और अपने सामान्य साथियों के साथ सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम को सीखने में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं परिणामतः सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों में परस्पर अपने-पन की भावना विकसित होती है।

- **व्यक्तिगत समर्थन:** इस प्रतिमान में कई शिक्षकों के एक साथ कक्षा में उपस्थित होने के कारण, विद्यार्थियों को शिक्षकों का व्यक्तिगत समर्थन एवं विशेष ध्यान मिलता है। इससे विद्यार्थी अपनी विशिष्ट अधिगम आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर छोटे-छोटे समूह में अथवा वैयक्तिक स्तर पर सहायता अथवा अतिरिक्त मार्गदर्शन प्राप्त कर लेते हैं।
- **लचीला समूहन**: यह प्रतिमान एक लचीली समूह व्यवस्था की अनुमति देता है जहां विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकताओं, रुचियों या अधिगम की शैलियों के आधार पर समूहीकृत किया जा सकता है। शिक्षक यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक विद्यार्थी को उचित शैक्षिक निर्देशन एवं मार्गदर्शन प्राप्त हो सके, वह विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूह या अधिगम स्टेशनों के रूप में आसानी से व्यवस्थित एवं प्रबंधित कर सकते हैं।
- **व्यावसायिक विकास:** यह प्रतिमान सामान्य और विशेष शिक्षकों के लिए चल रहे व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित करता है। वे एक-दूसरे की विशेषज्ञता से सीखते हैं साथ ही सर्वोत्तम शिक्षण प्रथाओं को आपस में साझा करते हैं तथा समावेशी शिक्षण रणनीतियों के प्रति गहरी समझ को विकसित एवं प्राप्त करते हैं।
- **सकारात्मक भूमिका शीलगुण**: यह प्रतिमान कक्षा में सामान्य शिक्षक एवं विशेष शिक्षक की उपस्थिति द्वारा सभी विद्यार्थियों में एक सकारात्मक भूमिका के शीलगुण को विकसित का कार्य करता है तथा विद्यार्थियों में व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रति सहानुभूति, समझ तथा सम्मान जैसे गुणों में वृद्धि भी करता है।
- **बेहतर परिणाम:** इस प्रतिमान पर किए गए शोधों से यह ज्ञात हुआ कि यह प्रतिमान दिव्यांग विद्यार्थियों को एक बेहतर शैक्षणिक एवं सामाजिक परिणाम लाने में मदद करता है तथा सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम तक उनकी पहुंच एवं समग्र सीखने के अनुभवों को बढ़ाता है।

3. शैक्षिक निहितार्थ

समावेशी शिक्षण प्रतिमान वस्तुतः समावेशी शिक्षा की सार्वभौमिक एवं वैश्विक पूर्ति तथा सफलता के लिए सफल प्रयास करते हैं, लेकिन इनका प्रयास तब तक फलीभूत नहीं होगा जब तक इन प्रतिमानों की पहुँच सम्पूर्ण कार्यरत शिक्षक एवं भावी शिक्षक समुदाय तक सुनिश्चित नहीं होती है। शैक्षिक समुदाय में जब भी समावेशी शिक्षण प्रतिमानों की चर्चा होती है तब उनके प्रति केवल विशेष शिक्षकों के दायित्व बोध का विचार उद्धृत किया जाता है जबकि वास्तविक यथार्थ यह है कि जब तक सामान्य शिक्षक समावेशी शिक्षण प्रतिमानों से पूर्णतया परिचित नहीं होगें तथा उन्हें अपने शिक्षण में शामिल नहीं करेगें तब तक समावेशी शिक्षा की अवधारणा जमीनी स्तर पर चरितार्थ नहीं होगी क्योंकि समावेशी समाज का निर्माण मूलरूप से एक समावेशी कक्षा से ही संभव होगी और समावेशी कक्षा के निर्माण का पूर्ण दायित्व शिक्षकों एवं उनके शिक्षण पर है। इसलिए सभी कार्यरत सामान्य शिक्षकों को सभी समावेशी शिक्षण प्रतिमानों से परिचित करवाने के लिए वृहत स्तर पर सभी शैक्षिक संस्थाओं में कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के गुरुदक्षता जैसे कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम में कुछ समावेशी शिक्षण प्रतिमानों का अनिवार्य प्रतिनिधित्व किया जाए साथ ही भावी शिक्षक शिक्षा के सभी पाठ्यक्रमों में भी समावेशी शिक्षण प्रतिमानों के प्रशिक्षण का प्रावधान किया जाए।

सन्दर्भ सूची

- https://www.allfie.org.uk/definitions/what-is-inclusive-education/
- https://www.unicef.org/eca/sites/unicef.org.eca/files/IE_summary_accessible_220917_brief
- https://en.wikipedia.org/wiki/Inclusion_(education)।
- https://dsel.education.gov.in/inclusive-education।
- https://operations.du.edu/inclusive-teaching/inclusivepedagogy#:~:text=What%20is%20 Inclusive।
- https://www.tandfonline.com/doi/full/13603116.2017.1412513/10.1080।
- https://www.adda.247com/teaching-jobs-exam/models-of-teaching /?srsltid=AfBOorv।

1. Florian, L.& Linklater, H.(.(2010*Preparing Teachers for Inclusive Education: Using Inclusive Pedagogy to Enhance Teaching and Learning for All.* Cambridge Journal of Education, (4)40, .386-369 doi:0305764/10.1080X. 2010.526588।

2. Panti, N. & Florian, L. (.(2015 *Developing teachers as agents of inclusion and social justice. Education Inquiry* (Edu. Inq.) (3)6, 351l-333
3. Rouse, M. & Florian, L. (2012, September). *Inclusive Practice Project: Final Report*. Aberdeen:UniversityofAberdeen.Availableat:http://www.efds.co.uk/assets//6672/0000OO195l
4. Iturbe-LaGrave, **V.** (2018, April 16). *Formative assessment and critical self-reflection in the inclusive teaching practices faculty video consultation protocol*. In *Dreams, possibilities, and necessity of equity: Exploring the transformative potential of assessment*. Paper presented at the American Educational Research Association (AERA) Annual Meeting, New York,
5. Rose, D. H., & Meyer, A. (2022). *Universal design for learning: Theory and practice*. CAST Professional Publishing.
6. Pino-James, N. (2014, December 8). Golden rules for engaging students in learning activities. *Edutopia*. https://www.edutopia.org
7. Ambrose, S. A., Bridges, M. W., DiPietro, M., Lovett, M. C., & Norman, M. K. (2010). *How learning works: Seven research-based principles for smart teaching*. Jossey-Bass.
8. Florian, L. (2024, November 6). *Inclusive pedagogy: addressing special needs in the classroom*. European School Education Platform. Retrieved from https://school-education.ec.europa.eu
9. Bhayana, H**.** (2019, September 8). *What is inclusive education?* APSense. Retrieved July 24, 2025, from https://www.apsense.com/article/what-is-inclusive-education.
10. StudySmarter. (2024). *Inclusive pedagogy: Definition and classroom strategies*. https://www.studysmarter.co.uk/explanations/education/inclusive-pedagogy.
11. AskSource. (n.d.). *Inclusive education (general)*. AskSource: Disability, Inclusion & Development. Retrieved from https://asksource.info/topics/education/inclusive-education-general.